बड़े काम के हैं भाषा के काम

पारुल बत्रा दुग्गल



शुरुआती भाषा शिक्षण में जो कार्य प्रमुख तौर पर किया जाता है, वह है भाषा के उद्देश्यों के अन्तर्गत सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशलों का विकास करना। आम बोलचाल में शिक्षकों ने इसे सुबोपलि का नाम दिया हुआ है। भाषा की पाठ्यपुस्तकों में भी इन कौशलों की विस्तार के साथ चर्चा की गई है, उदाहरण के लिए मध्यप्रदेश की कक्षा दूसरी की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक में इनके बारे में कहा गया है;

सुनना- सरल लेकिन अपरिचित कविताओं, गीतों एवं कहानियों को सुनकर समझ सकना, परिचित स्थितियों में वार्तालाप एवं संवाद को समझ सकना आदि।

पढ़ना- कम प्रचलित एवं संयुक्त अक्षरों की पहचान कर सकना, मोटे एवं छोटे अक्षरों में छपी विषय सामग्री को पढ़ सकना और पदों, कविताओं, सरल कहानियों का वाचन कर सकना आदि।

लिखना- दिए गए शब्दों को देखकर लिख सकना, परिचित शब्दों का

श्रुतलेख लिख सकना, निर्देशानुसार वाक्य लिख सकना आदि।

वहीं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद यानी एन.सी.ई.आर.टी. ने इन्हें सीखने के प्रतिफलों के रूप में पहली और दूसरी कक्षा की हिन्दी के लिए इस प्रकार देखा है-

बच्चे सुनकर समझ पाएँ और सोचकर बोल पाएँ - कविता/ कहानी/ अनुभव/ विवरण हावभाव से सुना पाएँ, सुनकर मौखिक प्रश्नों के उत्तर दे पाएँ, चित्रों को देखकर विवरण सुना पाएँ एवं सुनी हुई बात पर अपना मत व्यक्त कर पाएँ, सरल मौखिक निर्देशों का पालन कर पाएँ एवं इनके अनुसार कार्य कर पाएँ आदि।

पढ़कर समझना और समझकर व्यक्त करना- परिचित शब्दों को कविता/ कहानी/ शब्द कार्ड/ श्यामपट्ट आदि में पहचान पाएँ एवं कक्षा-2 तक आते-आते इन्हें प्रवाह से पढ़ पाएँ। कक्षा-1 के अन्त तक आते-आते अधिकांश अक्षर एवं मात्राएँ पहचान पाएँ एवं कक्षा-2 के समाप्त होते-होते सभी अक्षरों और मात्राओं से शब्द बना पाएँ और पढ़ पाएँ। साथ ही, पुस्तकालय की सरल किताबों में से छोटी कहानी/ कविता की किताब पढ़ पाएँ।

लिखने के कौशल का विकास- अक्षर/ शब्द देखकर लिख पाएँ और कक्षा-1 के तीसरे चरण में अक्षर/शब्द मन से लिख पाएँ। बोले-सुने प्रश्नों का कक्षा-1 के अन्तिम चरण तक आते-आते एक-दो वाक्यों में उत्तर लिख सकें। कक्षा-2 में स्वयं पढ़कर एक-दो वाक्यों में उत्तर लिख पाएँ। कक्षा-3 तक आते हुए अपनी बात को छोटे पैरा के रूप में साफ स्पष्ट तरीके से लिख पाएँ आदि।

उपर्युक्त कौशलों के साथ ही बच्चे के साथ बातचीत करने पर भी ज़ोर दिया जाने लगा है। लेकिन आम तौर पर दैनिक जीवन में छोटे बच्चे जिस तरह से भाषा का इस्तेमाल करते हैं, जो काम बच्चे के आम जीवन में भाषा द्वारा होते हुए दिखाई देते हैं और जिस तरह से बच्चे भाषा का इस्तेमाल अपने व्यक्तित्व को निखारने में करते हैं, उसकी भाषा शिक्षण में व्यापक तौर पर चर्चा नहीं की जाती है।

सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने (सुबोपलि) पर कुछ ज़्यादा ही ज़ोर देने की वजह से शिक्षक का ध्यान व्यापक तौर पर इन्हीं के विकास पर केन्द्रित हो जाता है और भाषा के अन्य कौशल और जिन कौशलों के ज़रिए भाषा विभिन्न कार्यों को विस्तार देती है और जिनके ज़रिए बच्चे के अन्य भाषाई कौशल सुघड़ता पाते हैं, वे पीछे छूटते जाते हैं।

उदाहरण के लिए जब कोई बच्ची अपनी माँ से छुट्टियों में दादी के घर जाने की तैयारी पर बातचीत कर रही होती है, तब वह भाषा के ज़रिए क्या कर रही होती है? या जब कोई बच्चा दादी के घर से वापिस आकर अपने



क्या इसे हम समझ पाते हैं? सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के उपर्युक्त विवरणों में हम देखते हैं कि स्कूल या भाषा शिक्षण इसे अलग तरह से देखता है जिसमें बच्चे के शुरुआती जीवन में भाषा के बारीक और बुनियादी कार्यों की अक्सर अनदेखी होती है। यहाँ मैं घर में और स्कूल में बच्चों के साथ भाषा पर काम करने के अपने कुछ अनुभव आपके सामने रखना चाहूँगी जो बच्चे के शुरुआती जीवन में भाषा क्या-क्या कार्य करती है, की तरफ इशारा करेंगे। ये अनुभव चार-पाँच साल के बच्चों द्वारा विभिन्न कार्यों के दौरान उपयोग में लाई गई मौखिक भाषा के हैं।

दोस्तों को बताता है कि उसने वहाँ क्या-क्या किया, तब वह भाषा के माध्यम से क्या कर रहा होता है? या जब कोई बच्चा अपने दोस्त को समझाता है कि किस तरह से उसने पुराने खिलौने को सुधारकर वापिस खेलने लायक बना लिया, तब वह क्या कर रहा होता है? या जब कोई बच्चा खेलते-खेलते अपने खिलौनों से बातें कर रहा होता है, तब वह क्या कर रहा होता है?

इन आम जीवन की क्रियाओं में भाषा क्या कार्य कर रही होती है,

परिदृश्य एक

• पानी पिलाना - आपको पानी पीना है, रुको हम लेकर आते हैं, हम पानी ले आए, ये लो पानी, आपने पानी पी लिया, और चाहिए?

• सीढ़ी उतरना - हम सीढ़ियों से उतर रहे हैं, ऐसे-ऐसे उतर रहे हैं, हम नीचे आ गए।

• क्रिकेट खेलते हुए - हम बैटिंग करते हैं, बॉलिंग तुम करो, हम इस वाले पैर से करते हैं, हम अपनी जगह पर जाते हैं, अब बॉल फेंको,

वाह! क्या शॉट है, हमने फोर मार दिया, हमने सिक्स मार दिया, अब बॉल बाहर चली गई, लेने जाना पड़ेगा।

• मिटटी का खिलौना बनाते हुए - मैं इसको गोल घुमा रहा हूँ, देखो, अब मैंने एक गोला बना दिया, अब इसमें एक छेद बनाता हूँ, मैंने छेद बना दिया डण्डी से, अब इसके किनारे बनाऊँगा तीली से, अब मेरा पहिया बन गया।

• कार से खेलते हुए - मैंने कार में चाबी लगाई, मैंने ड्राइवर को बिठा दिया कार में, गेट बन्द कर दिया, डिक्की खोली, मैं डिक्की में बैठ गया। कार को स्टार्ट किया, सब चलें घूमने, सब सो गए रास्ते में, मैं भी सो गया। कार रुकी, मैंने ड्राइवर को उतारा, मैं भी उतरा, मैंने फिर कार को लॉक कर दिया।

उपर्युक्त पाँचों उदाहरणों में क्या हमें कोई समानता नज़र आती है? इसमें ये छोटे बच्चे खेलते हुए या बातचीत करते हुए क्या कर रहे हैं? अगर हम गौर करें तो जो कर रहे हैं, वे उसी के बारे में बता रहे हैं या अपने क्रियाकलाप को ही एक कमेंट्री या व्याख्या के रूप में बताते जा रहे हैं। इन विवरणों से हमारी यह समझ बनती है कि बच्चे अपने काम को इस व्याख्या या टीका-टिप्पणी के द्वारा जारी रखते हैं और उसे आगे ले जाते हैं। सम्भवतया, ये कथन उन्हें अपने काम में तल्लीनता बनाए रखने में भी मदद करते हों। इससे हम इस निष्कर्ष पर भी पहुँच सकते हैं कि बच्चे के दैनिक कार्यों, खेलों और अनुभवों का उसकी भाषा से गहरा सम्बन्ध है।

परिदृश्य दो

• ओह! खिड़की से एक छिपकली अभी अन्दर आई है, आप जाकर देखो।

• अरे! वह देखो बारिश हो रही है, कितने काले-काले बादल हैं।

• देखो-देखो, बाहर एक जेसीबी मशीन गड्ढा खोद रही है।

• ओह! यह काला कीड़ा मेरे बिस्तर पर चढ़ आया, कहीं काट न ले।

• अभी सायरन बजाती हुई वह पुलिस की गाड़ी निकली, ज़रा देखो।

• देखो मुझे फ्रिज में क्या मिला - एक आइसक्रीम।

• अरे! यह देख, पीछे खड़ी कार का टायर आगे वाली कार के टायर से बड़ा है।

• तुम इधर आओ, मैं तुमको बताता हूँ, एक चीज़ दिखाता हूँ। मैंने लकड़ी के टुकड़ों से ट्रेन बना दी है।

• देखो, मैंने साबुन से कितनी अच्छी झाग बनाई, इससे बुलबुले भी बना सकते हैं।

क्या उपर्युक्त सभी उदाहरणों में हमें कोई समानता नज़र आती है? इसमें बच्चे उनकी उम्र के हिसाब से



उन्हें जो कोई नई या अनोखी वस्तु लगी, उसकी तरफ दूसरों का ध्यानाकर्षण करना चाह रहे हैं। बच्चे चाहते हैं कि जिस वस्तु ने उन्हें उत्साहित किया या डराया या उन्हें अच्छी लगी, दूसरों को भी वह उसी प्रकार की लगेगी। बच्चे चाहते हैं कि वे जिस वस्तु की तरफ आकर्षित हुए हैं या जुड़ना चाह रहे हैं, बड़े या उनका दोस्त (दूसरा बच्चा) भी उसे उतनी ही रुचि और उत्सुकता से देखे। इस तरह वे दूसरों के क्रियाकलाप और ध्यान को अपनी ओर खींचते हुए, उसका हिस्सा बनाना चाहते हैं। अक्सर बच्चों द्वारा ऐसी माँगों या ध्यानाकर्षण को अनावश्यक मानकर उन्हें या तो झिड़क दिया जाता है या उन पर ध्यान नहीं दिया जाता। "अरे कभी बारिश नहीं देखी क्या", "छिपकली या कीड़े से क्या डरना", "हाँ जाओ, तुम बाहर जाकर देख लो जेसीबी मशीन और पुलिस की गाड़ी, मुझे परेशान मत करना। और इन सबमें नई बात क्या है? ऐसा तो होता ही रहता है" जैसे वाक्य बड़ों द्वारा परेशान होकर अक्सर बोले जाते हैं। इससे बच्चों के मन को ठेस पहुँचती

है और उनके मन में जो अपेक्षा है कि उनकी बात बड़ों को भी उतनी ही रुचिकर लगेगी, पूरी नहीं हो पाती है और इससे भाषा के विकास की बुनियाद को चोट पहुँचती है।

परिदृश्य तीन

- चलो चलें वास्ता, वहाँ खाएँगे पास्ता
- सो रहा था बाघ, जस रहा था जाग
- मकड़ी और मक्खी, सबकी पक्की
- भूसा होता है सूखी घास, और अपुन है झकास
- जंगल-जंगल बात चली है पता चला है, चड्डी पहन के जस चला है, जस चला है
- बागड़ बिल्ला, बागड़ बिल्ला म्याऊँ-म्याऊँ-म्याऊँ, मैं सब खा जाऊँ-जाऊँ
- आगे-आगे भैया, पीछे-पीछे गैया
- बोल पेंसिल, तेरी शादी कैंसिल
- एक खाओ केक, दो नाली में मुँह धो, तीन नजाई के चना बीन
- मैडम हमारी, आपकी सवारी गिर गई खचे (कीचड़) में, भिड़ गई बेचारी

ऊपर दी गई कुछ पंक्तियों को पढ़कर आपको भी मज़ा आया होगा। बच्चे खेलते समय, एक-दूसरे को चिढ़ाते समय या बोलते समय भाषा के साथ ऐसे बहुत-से खेल और तुकबन्दियाँ गढ़ लेते हैं। जैसे बच्चे खिलौनों से खेलते हैं वैसे ही बच्चे इन शब्दों और वाक्यांशों से खेलते हैं। आपने देखा होगा, किसी हँसने वाली बात को बच्चे बार-बार दोहराकर हँसते रहते हैं। कुछ कविताएँ देखते हैं-

आओ भाई खिल्लू
अभी तो की थी मिल्लू
भरा नहीं क्या दिल्लू
(प्रभात)

खा के रसगुल्ला
हमने किया कुल्ला
पानी में उठा बुल्ला
देख रहे थे मुल्ला
इल्ली उल्ला
(सर्वेश्वरदयाल सक्सेना)

हुआ लिफ्ट में पावर कट
मोबाइल में टावर कट
भालू दरवाज़े को पीटे
खट-खट-खट
खट-खट-खट
(प्रभात)

ऐसी कविताएँ जब किसी बच्चे को सुनने को मिलती हैं तो वे उसके लिए हाथ लगे किसी नए खिलौने जैसी ही होती हैं और वे इनसे खूब खेलते हैं और अपने हिसाब से शब्दों को उलटते-पलटते हैं। शब्दों से इस तरह खेलना, इनके भाषाई विकास में अहम

भूमिका निभाता है। ऐसी कविताएँ सुनकर बच्चे हँसी से लोट-पोट हो जाते हैं। स्कूल जाने से पहले बच्चों को ढेरों खेल गीत याद हो जाते हैं। उनके याद हो जाने के पीछे भी यही कारण है कि शब्दों का ऊटपटांग प्रयोग उन्हें अच्छा लगता है। शब्दों की धुन और लय उन्हें आकर्षित करती है, जैसे इन खेलगीतों को देखें-

• झूल भईया झूल, तेरी पेटी में फूल (झूला झूलने का गीत हिन्दी-बुन्देलखण्डी में)

• झूटे माइयाँ मक्खियाँ भगाइयाँ, मक्खी गई पानी भर के लियाई रानी, रानी बनाइयाँ रोटियाँ सारियाँ गल्लां खोटियाँ (झूला झुलाने का पंजाबी गीत)

• आओ लेलो, सीलो सालो, कच्चा धागा, रेस लगालो

• घोड़ा दीवान शाही, पीछे देखो मार खाई, पीपल का पत्ता हरा दुपट्टा

• पोशम पा भई पोशम पा, चाय की पत्ती पोशम पा

पाठ्यपुस्तक की किसी कविता की बजाय ऐसे गीत गाते-दोहराते बच्चे आपको ज़रूर मिल जाएँगे। वे स्कूल आने से पहले ही भाषा के इस खेल से परिचित होते हैं।

परिदृश्य चार

• **नाखून कैसे कट गया** - हम बॉल से खेल रहे थे। बॉल एक गाड़ी के नीचे चली गई, हम उसको निकालने गए, हमने बॉल को लात मारी ज़ोर-से लेकिन हमारा पाँव पत्थर में लग गया और पूरा नाखून उखड़ गया, फिर हम बहुत रोए, हमें चोट लग गई थी न, फिर हमने यहाँ से ऐसे पकड़ा नाखून को और दबाया फिर दवाई लगाई, ऐसा हुआ था।

• **बॉल कैसे मिली** - हमारी बॉल खो गई थी न, बहुत दिनों से मिल ही नहीं रही थी, फिर जब हम पार्क में गए तो झाड़ियों के पास जब खेल रहे थे तब कुछ पीला-पीला दिखा झाड़ियों के पीछे। वहाँ जाकर देखा तो बॉल पड़ी हुई थी वहाँ। हम बहुत खुश हो गए फिर।

• **गड्ढा कैसे खुदा** - तुमको पता है, कल रात को जब बहुत बारिश हुई थी तो वो पार्क के सामने वाला बड़ा पेड़ गिर गया था दीवार पर, फिर जेसीबी मशीन आई थी खुदाई करने,



उसने एक बड़ा-सा गड्ढा खोदा और पूरा-का-पूरा पेड़ उखाड़ा और फिर पेड़ को दीवार पर से हटाया, उससे पार्क की आधी दीवार टूट गई थी।

• **मैं कैसे गिरा** - मैं गाड़ी में सीधे टिककर बैठा था, हाथ सामने रखकर (अभिनय करके बताते हुए)। तभी एक स्पीड ब्रेकर आया, मैं बहुत ज़ोर-से उछला और ऐसे नीचे जाकर गिरा (गिरने का अभिनय करते हुए)।

• **दोस्त से लड़ाई कैसे हुई** - जब हम दोनों साथ में खेल रहे थे तो मेरा दोस्त मुझे चिढ़ा रहा था, उसने मुझे मोटा गुलगुला कहा तो मैंने भी उसे सांड कह दिया। फिर उसने मुझे पीठ पर घूँसा मारा तो मैंने भी मार दिया। फिर उसने मेरी शर्ट खींची तो मैंने उसे धक्का दिया। फिर वो रोने लगा और अपनी मम्मी से शिकायत करने चला गया। अब इसमें मेरी गलती कहाँ है, आप बताओ? शुरुआत तो उसने ही की थी न।

इन उदाहरणों में हम देख सकते हैं कि बच्चे जो कुछ घटा, उसे समझाना चाहते हैं और दूसरे व्यक्ति के समक्ष वह पूरा परिदृश्य प्रस्तुत करना चाहते हैं जो उस समय वहाँ नहीं था, उस घटना का साक्षी नहीं था। कई बार उनकी भाषाई क्षमता इतनी विकसित नहीं होती और कई घटनाओं और चीज़ों को अभिव्यक्त करने के लिए उनके पास शब्द नहीं होते लेकिन वे पूरी स्पष्टता के साथ अपनी बात रखते हैं। हम देख सकते हैं कि बच्चे उनके जीवन में जो कुछ घटित हो रहा होता है, उसकी व्याख्या कर रहे होते हैं। बड़ों की तरह छोटे बच्चे भी ज़िन्दगी की घटनाओं के बारे में बताना-समझाना चाहते हैं।

इसे एक अन्य उदाहरण से भी समझ सकते हैं। मान लीजिए, पाँच लोग भोपाल से अलग-अलग सफर करके एक ही कार्यक्रम में दिल्ली पहुँचे हैं और उन सभी को दिल्ली तक पहुँचने में उनके साथ घटी किसी एक घटना को वर्णनात्मक रूप से साझा करने को कहा गया। इस तरह के घटनाक्रम सुनने पर हमारे पास पाँच कहानियाँ होंगीं जिनमें हो सकता है किसी की ट्रेन बमुश्किल छूटते बची हो, किसी का रास्ते में एक्सीडेंट होते बचा हो, कोई किसी ज़रूरी चीज़ को लाना भूल गया हो और किसी को रास्ते में एक खोया हुआ बटुआ मिला हो। जीवन की इन सामान्य घटनाओं से ही कहानियों या कथ्य की शुरुआत होती है। कोई भी घटना छोटी या बड़ी नहीं होती, बच्चों को उनके साथ घटी घटनाएँ भी उतनी ही महत्वपूर्ण लगती हैं, चाहे वह उनका नाखून कट जाना हो या किसी बात पर गुस्सा हो जाना या पसन्दीदा खिलौने का खो जाना।

परिदृश्य पाँच

• पता है, हम मार्केट गए थे घूमने के लिए, सबने आइसक्रीम खाई

लेकिन हमने नहीं खाई, हमारा गला खराब था न, सबने कहा - थोड़ी-सी खा लो, कुछ नहीं होगा, लेकिन हमने मना कर दिया। फिर डॉक्टर के पास जाना पड़ता, सुई लगवानी पड़ती।

• आपको याद है, जब हम पिछले साल मई में हनुवंतिया घूमने गए थे तो रास्ते में हमारी गाड़ी पंचर हो गई थी और कितनी गर्मी थी तब, रोड का डामर भी पिघल रहा था, हम गाड़ी से नीचे उतरते तो जल ही जाते।

• मुझे नए स्कूल में जाने से बहुत डर लगता है, पता नहीं वहाँ सब लोग कैसे होंगे।

• जैसे ही रात में बादल गरजा, हम डर गए, हमें बहुत डर लगा सच में।

• हम छछून्दर से डर गए मम्मी, हम डर गए, हम डर गए।



हमारी अधिकतर बातें अपने अनुभवों की और अपने जीवन की अभिव्यक्ति ही होती हैं। हम अपने आसपास जो कुछ भी घट रहा होता है, उसे व्यक्त करते चलते हैं। बच्चा भी इसी तरह अपने जीवन के अनुभवों को भाषा के माध्यम से व्यक्त कर रहा होता है। कोई भी घटना या अनुभव हो चुकने के बाद भाषा के माध्यम से हमारे पास उपलब्ध होता है, हम चाहें तो उसे लिखित रूप में दर्ज कर सकते हैं।

जब हमारे जीवन में कुछ ऐसा घटता है जो भयानक हो, चौंकाने वाला हो या डरावना हो तो हम उसे बार-बार अपने परिजनों के साथ साझा करते हैं, उसके बारे में बार-बार बात करते हैं, इस तरह दोहराने से वह डर या अनिश्चय की भावना कम होने लगती है, इसी तरह बच्चों के साथ भी होता है। अगर छोटे बच्चे किसी चीज़ से डरते हैं तो वे उसे बार-बार दोहराते हैं।

परिदृश्य छह

• सीमा मैं समझ सकती हूँ, जब सायना ने तुमसे कहा कि तुमने उसके बस्ते से उसकी पेंसिल चुराई है तो मुझे सुनकर बहुत बुरा लगा, तुम्हें भी लगा होगा, मैं तुम्हें अच्छे से जानती हूँ, तुमने ऐसा नहीं किया होगा और तुम भी बहुत बुरा महसूस कर रही होगी।

• दादी के जन्मदिन पर उन्हें एक कार्ड बनाकर दूँगी तो उनको अच्छा लगेगा।

• लालची कौवे की कहानी सुनने के बाद बच्चा पूछता है कि इस कहानी में कौवा तो भूखा ही रह गया और कौवे की रोटी तो लोमड़ी हड़प कर गई।

• मेरी चिड़िया (खिलौने) को 'हाथी राजा' वाली कविता सुना दो।

• मेरे भालू (खिलौने) को मेरी साइकिल पर बिठा कर घुमा दो।

उपर्युक्त उदाहरणों में हम देख सकते हैं कि बच्चे किसी परिस्थिति (अच्छी या बुरी) में अन्य व्यक्ति की भावनाओं की कल्पना कर पाते हैं, कहानी में किसी पात्र की भावनाओं को महसूस कर पाते हैं, या किसी खिलौने से अपने आप को जोड़ते हैं। यह जुड़ना भाषा के माध्यम से ही हो पाता है, किसी स्थिति में किसी ने कैसा महसूस किया होगा, भाषा के माध्यम से उसकी भावनाओं की कल्पना कर हम लगभग वैसा ही महसूस करने की कोशिश करते हैं। किसी कहानी में किसी भूखे पात्र के प्रति यह रुख रखना कि जैसे मुझे भूख महसूस होती है, वैसे इसे भी हुई होगी, अपने खिलौने को यह महसूस करवाना कि जितना मज़ा मुझे साइकिल पर घूमकर या कविता सुनकर आता है, उसे भी आएगा। यह भाषा के ज़रिए जुड़कर अनुभव किया जाता है।

प्रेमचंद की कहानी *ईदगाह* पढ़ते हुए हर बच्चे को हामिद अपने दोस्त-सा ही लगता है और वह उसके साथ ही मेला घूम रहा होता है, थोड़ी देर के लिए हामिद उनमें ही आ जाता है, ठीक उसी तरह जिस तरह हम सभी 'चंद्रकांता' उपन्यास को पढ़ते हुए खुद को तिलिस्मी गुफाओं और ऐयारों के बीच पाते हैं। भाषा एक तरह से हमें जीवन से जोड़ती है।

परिदृश्य सात

• मेरे जन्मदिन पर मुझे नए खिलौने मिलेंगे और हाँ, वह नई फुटबाल भी जो मैंने माँगी थी।

• पता नहीं जब नए स्कूल जाऊँगा तो कैसा लगेगा, मेरे भैया बताते हैं कि वहाँ तो बहुत सारे टीचर हैं और डाँट भी पड़ती है, बहुत बड़ी बिल्डिंग है, मैं तो रास्ता ही भूल जाऊँगा। वहाँ कोई दोस्त नहीं बना मेरा, तो? मैं किसी से बात ही नहीं कर पाऊँगा, फिर मुझे नहीं अच्छा लगेगा वहाँ, मैं तो नहीं जाता नए स्कूल।

• मैं गर्मियों की छुट्टियों में अपनी नानी के घर जाने वाली हूँ। इस बार उनके घर के पास की नदी में मामा के साथ तैरना और मछलियाँ पकड़ना सीखूँगी, बड़ा मज़ा आएगा।

• कल घर पर मेहमान आने वाले हैं। सब बड़े लोग व्यस्त रहेंगे इसलिए हम पर कोई ध्यान नहीं देगा। छोटे भाई, कल हम बाहर कबाड़ रखने वाली जगह पर खेलेंगे, और कुछ नई

चीज़ें ढूँढ़ेंगे, वैसे तो सब मना कर देते हैं वहाँ खेलने को।

इन सभी परिस्थितियों पर गौर करें तो इनमें एक तरह से आगे के काम की तैयारी, कल्पना और भविष्य की योजना-सी दिखाई देती है। ये सब अभी बच्चे के जीवन में घटित नहीं हुआ है बल्कि होने वाला है। इनमें से कुछ घटित हो भी सकता है और नहीं भी, लेकिन इन परिस्थितियों के प्रति अपनी अपेक्षा और विचार बच्चे अभिव्यक्त कर पाते हैं। जीवन में भाषा के द्वारा इस तरह की तैयारी हमें उन परिस्थितियों से जूझने में मदद करती है। जैसे हो सकता है कि बच्चे ने अपने जन्मदिन पर जो चाहा वो उसे न मिल पाए और वह सोचे कि इस साल नहीं मिला तो कोई बात नहीं, शायद अगले साल मिल जाए। हो सकता है कि बच्चे का नया स्कूल वैसा न हो जैसा उसने सोचा और वह पहले से खुश महसूस करे, हो सकता है कि बच्ची ने तैरने और मछली पकड़ने के बारे में जो सोचा, सब वैसा ही हो, तो उसकी भावनाएँ और पुष्ट ही होंगी।

परिदृश्य आठ

• टिटहरी कहाँ गई? (हरी घास में चलते-चलते टिटहरी अचानक पेड़ के पीछे छुप गई है जिसे बच्चा देख रहा था)

• आज घर में इतनी शान्ति क्यों है?

• बारिश के दिनों या सर्दियों की धुन्ध में ट्रेन के हॉर्न की आवाज़ बहुत दूर तक क्यों सुनाई देती है?

• बादलों में बिजली क्यों कड़कती है?

• सुरक्षा का क्या अर्थ है?

• कोई त्यौहार साल भर बाद वापिस कैसे आता है?

• आम की गुठली के अन्दर क्या होता है?

• अभी तक दूध वाले भइया दूध देने क्यों नहीं आए?

• अभी तक मेरा भाई सोकर क्यों नहीं उठा?

दिए गए सभी उदाहरण किसी समस्या या प्रश्न की ओर इशारा करते हैं। ज़रूरी नहीं है कि बच्चे के पास इन प्रश्नों के उत्तर हों लेकिन भाषा की मदद से वे समस्या की ओर ध्यान दिलाना, उसे सुलझाना और उसकी तह में जाना चाहते हैं। यह इस पर भी निर्भर करता है कि जब बच्चे किसी बड़े से ऐसा कोई प्रश्न पूछते हैं तो उन्हें किस तरह के जवाब मिलते हैं। इनमें से कुछ प्रश्नों के उत्तर तो शायद विज्ञान के आधार पर देने होंगे, जैसे - बिजली क्यों कड़कती है या सर्दियों के मौसम में ट्रेन के हॉर्न की आवाज़ तेज़ क्यों सुनाई देती है। और कुछ प्रश्नों के उत्तर सामाजिक मान्यताओं के आधार पर जैसे - सुरक्षा का अर्थ या त्यौहार कब आते हैं। लेकिन किसी भी प्रश्न पर बच्चे के साथ किस तरह से चर्चा



की जा रही है, यह बेहद महत्वपूर्ण है। इस तरह से बच्चे भाषा का इस्तेमाल अपने तर्क गढ़ने, राय बनाने और किसी सवाल के उत्तर तक पहुँचने के लिए कर रहे होते हैं। और जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का सामना भाषा के माध्यम से कर पा रहे होते हैं।

भाषा का सार संक्षेप

ऊपर दिए गए सभी परिदृश्यों को एक साथ देखें तो भाषा हमारे जीवन में हमारे कार्यों के संचालन में, दूसरों का ध्यानाकर्षित करने में, भाषा से खेलने में, अपनी बात को समझाने में, जीवन से जुड़ने और उसे प्रस्तुत करने में, तैयारी, पड़ताल और तर्क करने में सहायक होती है। जैसा कि दिए गए उदाहरणों से लगता है कि बच्चे स्वाभाविक रूप से तो यह सब कर ही रहे होते हैं और वे जो कुछ भी कर रहे होते हैं, उसमें सुनना और

बोलना तो हो ही रहा होता है। लेकिन इनके ज़रिए बच्चे के 'भाषाई जीवन' में जो घटता है, वह अलग होता है। उदाहरण के लिए, किसी प्रश्न को पूछने में या अपनी जिज्ञासा व्यक्त करने में जिस तरह की भाषा उपयोग होगी, वह अतीत में घटी किसी घटना को बताने में उपयोग की गई भाषा से अलग होगी। मान लीजिए, कोई घटना घट चुकी है और कोई घटना घटने वाली है। उसे बताया तो बोलकर ही जाएगा लेकिन घटी हुई घटना के बारे में बता पाना, उसकी भाषा गढ़ पाना और अपने भाषाई शब्दकोष के ज़रिए उसका बयान कर पाना, भाषा के 'समझाने' के कौशल के ज़रिए होगा।

जिस तरह से विज्ञान की भाषा गणित की भाषा से अलग है, उसी तरह बच्चा जब अपने जीवन से जुड़ी बात को प्रस्तुत करता है तब उसकी भाषा किसी बात की पड़ताल करने या किसी बात की तह तक जाने में उपयोग हो रही भाषा से अलग होती है। उदाहरण के लिए, तुकबन्दी गढ़ना कोई सहज काम नहीं है, जग्गा के बाद मग्गा आएगा या गग्गा, यह तो *अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो* जैसी कविता को लिखने का अनुभव ही बता सकता है।

उपर्युक्त परिदृश्यों में वर्णित कौशलों पर काम करने के लिए अलग तरह की तैयारी की ज़रूरत है। इसलिए स्कूल में सुनने और बोलने को भी अलग तरीके से देखे जाने की ज़रूरत है और बोलने में भाषा किस तरह से अलग-अलग कार्य कर रही है, उसपर गौर करने की ज़रूरत है। शुरुआती कक्षाओं में इस ध्यानाकर्षण के साथ भाषा का शिक्षण किए जाने की आवश्यकता महसूस होती है। अगर भाषा के इन कार्यों को कक्षा में भी स्थान मिले और कक्षा शिक्षण की प्रक्रिया में ऐसे मौके बनाए जाएँ कि बच्चे उसी तरह अपनी बात रख पाएँ जैसे वे आम जीवन में रखते हैं, तो बच्चों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति बेहतर हो सकेगी। कक्षा में क्या किया जा सकता है, उसके कुछ सम्भावित उदाहरण-

• किसी एक दिन बच्चों से उनकी प्रिय चीज़ों या खिलौनों और उन्हें क्या करना पसन्द है, पर बात की जाए और विस्तार से बताने को कहा जाए।

• किसी अन्य दिन बच्चों को अगले एक हफ्ते तक वे नाश्ते या मध्याह्न भोजन में क्या खाना चाहेंगे, इसकी एक सूची बनाने को कहा जाए या किसी काल्पनिक यात्रा, जहाँ वे जाना चाहते हैं, का विवरण बताने को कहा जाए।

• अगर सभी को एक-एक पिल्ला दिया जाए तो वे किस तरह उसकी देखभाल करेंगे, यह बताने को कहें।

• किसी एक दिन बच्चे को, कल उसके घर में क्या हुआ, उस बारे में

कोई एक घटना बताने को कहा जाए।

• दोस्त से झगड़ा होने या किसी से नाराज़ होने पर कैसा लगता है, बताने को कहा जाए।

बच्चे भाषाई परिवेश में ही बड़े होते हैं और स्कूल आने से पहले मौखिक भाषा पर अधिकार रखते हैं। वे अलग-अलग सन्दर्भों में भाषा का सही तरीके से इस्तेमाल कर पाते हैं, स्कूल में वे प्रधानअध्यापिका से अलग तरीके से बात करते हैं, अपने दोस्त से अलग तरीके से, तो घर में दादी से अलग तरीके से। यह इस पर भी निर्भर करता है कि वे अपने आसपास के लोगों को भाषा का कैसा इस्तेमाल करते हुए देखते हैं। अगर कोई शिक्षिका अपने अनुभव हमेशा विस्तार से और क्रमबद्ध तरीके से अभिव्यक्त करती है तो बच्चों का ध्यान भी इस तरफ जाता है कि अपनी बात को विस्तारपूर्वक और सिलसिलेवार कैसे समझाया जाता है।

इसी तरह हमें कक्षा में भी उन्हें भाषा को विभिन्न सन्दर्भों में इस्तेमाल करने के मौके देने होंगे। शुरुआती प्राथमिक कक्षाओं में यह मौखिक तौर पर किया जा सकता है और उच्च-प्राथमिक कक्षाओं में लिखकर किया जा सकता है। इस तरह भाषा के विभिन्न कार्यों में विभिन्न भाषाई कौशलों को समझने और उन्हें विकसित होने के भरपूर अवसर देने होंगे। इसके लिए हम स्कूल में एक ऐसा माहौल निर्मित करने का प्रयास कर सकते हैं जिसमें बच्चे को भाषा के सभी कार्यों से सायास गुज़रने के भरपूर अवसर मिल सकें।

पारुल बत्रा दुग्गल: पिछले आठ वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, भोपाल में काम कर रही हैं और फिलहाल सरकारी स्कूल के शिक्षकों और बच्चों के साथ शुरुआती पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाओं को समझने में जुटी हैं। बच्चों के लिए कई किताबें प्रकाशित। बाल-साहित्य और बच्चे कैसे सीखते हैं, यह समझने में गहरी दिलचस्पी है।

सभी चित्र: हीरा धुर्वे: भोपाल की गंगा नगर बस्ती में रहते हैं। चित्रकला में गहरी रुचि। साथ ही, 'अदर थिएटर' रंगमंच समूह से जुड़े हुए हैं। फिलहाल, *एकलव्य* में डिज़ाइन टीम के साथ इंटर्नशिप कर रहे हैं।

यह लेख पारुल बत्रा दुग्गल के बेटे के रोज़ाना के क्रियाकलापों से प्रेरित है।

सन्दर्भ:

1. भाषा भारती कक्षा-2 , मध्यप्रदेश, राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल (कक्षा दूसरी की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक)
2. सीखने के प्रतिफल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT)
3. बच्चे की भाषा और अध्यापक, एक निर्देशिका - कृष्ण कुमार, नेशनल बुक ट्रस्ट (NBT)
4. भाषा: प्रकृति और संरचना, राजेन्द्र सिंह से एक बातचीत, विद्या भवन पब्लिकेशन, उदयपुर
5. भाषा का बुनियादी ताना-बानाः एक संकलन, विद्या भवन पब्लिकेशन, उदयपुर
6. समझ का माध्यम (NCERT)